eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

कामायनीः परंपरा और समकालीनता के साथ भविष्य से साक्षात्कार

[1]श्री गोपाल सिंह
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी) श्रीगाँधी महाविद्यालय सिधौली, सीतापुर (उ.प्र.)

Received: 10 July 2022, Accepted: 20 July 2022, Published with Peer Reviewed on line: 31 July 2022

Abstract

कामायनी एक कालजयी कृति है। इसमें कवि अतीत,वर्तमान और भविष्य तीनों से साक्षात्कार करता है। कामायनी की कथा वैदिक व पौराणिक आख्यान पर आधारित है। जयशंकर प्रसाद ने ऋग्वेद, शतपथ ब्राह्मण और पुराणों से अनेक उदाहरण देकर मनु की ऐतिहासिकता को सिद्ध किया है। इतिहास की पृष्ठभूमि पर आधारित होकर भी कामायनी वैदिक आख्यान मात्र नहीं है वरन रूपक के माध्यम से इसमें श्री जयशंकर प्रसाद ने आधुनिक मानव के मनोविज्ञान को भी उद्घाटित किया है। साथ ही कामा़यनी अपने युग के श्रेष्ठ विचारों को भी अभिव्यक्त करती है जैसे मानववाद, गांधीवाद इत्यादि। इसके साथ ही कामायनीकार ने भविष्य जीवन की अनेक चुनौतियों को भी प्रस्तुत किया है। इसी कारण हम कामायनी को कालजयी कृति कहते हैं।

बीज शब्द–समकालीनता, मन्वंतर, समरसता, सर्वोदय, सत्याग्रह, साम्यवाद, मानववाद, आनंदवाद।

Introduction

कामायनी एक युगद्रष्टा साहित्यकार की कालजयी कृति है। यह वैदिक जन से आधुनिक जनतंत्र के मूल्यों को न केवल स्वयं में समेटे हुए है बल्कि इन्हें सशक्त बनाने की प्रेरणा भी देती है। कामायनी के आमुख में श्री जयशंकर प्रसाद लिखते हैं –"आर्य साहित्य में मानवों के आदि पुरुष मनु का इतिहास वेदों से लेकर पुराण और इतिहासों में बिखरा हुआ मिलता है।....मन्वंतर के अर्थात मानवता के नव युग के प्रवर्तक के रूप में मनु की कथा आर्यों की अनुश्रुति में दृढ़ता से मानी गई है इसलिए वैवस्वत मनु को ऐतिहासिक पुरुष ही मानना उचित है।.....मनु श्रद्धा और इड़ा इत्यादि अपना ऐतिहासिक महत्व रखते हुए सांकेतिक अर्थ की भी अभिव्यक्ति करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।"1

स्पष्ट है कि कामायनी की रचना ऐतिहासिक आधार को लेकर हुई है। कामायनी की घटनाएं व चरित्र ऋग्वेद शतपथ ब्राह्मण वह पुराणों के आधार पर रचे गए हैं। श्रद्धा मनु इड़ा का चरित्र ऋग्वेद व शतपथ ब्राह्मण से प्रेरित है। आमुख में श्री जयशंकर प्रसाद ने इनसे संबंधित ऋचाओं का भी उल्लेख किया है–"

" श्रद्धां हृदय्य याकूत्या श्रद्धया विदन्ते बसु"2

इसी प्रकार आमुख में जयशंकर प्रसाद ने इड़ा के चरित्र की ऐतिहासिकता को बताते हुए ऋग्वेद की पहले मंडल की ऋचा का उल्लेख किया है। इसी प्रकार यादावै श्रद्धाधाति अथमनुते आदि ऋचाओं का उल्लेख करते हुए उन्होंने मनु की भी ऐतिहासिकता सिद्ध किया है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

जल प्रलय जो कामायनी की कथा का मूल आधार है, जयशंकर प्रसाद इस जल प्रलय की घटना को ऐतिहासिक संदर्भ में ग्रहण करते हैं। इस संदर्भ में वह ऋग्वेद, शतपथ ब्राह्मण तथा पुराणों से अनेक प्रमाण देते हैं। शतपथ ब्राह्मण में जल प्रलय की घटना को ओघ कहा गया है। इसमें वर्णित कथा के अनुसार– एक दिन प्रभात के समय जल लेते समय मनु के हाथ में एक छोटी सी मछली आ गई। उसने मनु से रक्षा की प्रार्थना की ।इसके साथ ही उस मछली ने मनु को आगामी प्रलय की सूचना दी। उसने कहा कि तुम नौका बनाकर उसमें चढ जाना और मैं बड़ी होकर तुम्हारी रक्षा करूंगी। कालांतर में यही मछली बहुत बड़ी हो गई और इसी ने मनु की नाव को प्रलय के समय अपनी सीगों से बांधकर उत्तर गिरि की चोटी पर पहुंचा दिया। इस प्रकार मनु द्वारा रक्षित एवं पोषित मत्स्य ने मनु को बचाया। इसी तरह से जैमिनीय ब्राह्मण में भी इस कथा का संक्षिप्त रूप मिलता है। वहां बताया गया है की सामवेद की ऋचाएं स्वर्ण नौका बनकर मनु की रक्षा करती हैं। जल प्रलय की घटना के संदर्भ में महाभारत में भी शतपथ ब्राह्मण से मिलती–जुलती कथा आई है। जैन ग्रंथों में भी जल प्लावन और मनु का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त विश्व साहित्य में भी अनेक रूपों में जल प्रलय का वर्णन है यथा बाइबिल में नूह की कथा जहां परमेश्वर यहोवा पृथ्वी का विनाश करने के पूर्व अपने भक्तों को एक विशाल नौका बनाने का परामर्श देते हैं और उस नौका की सहायता से नूह जल प्लावन से बच जाते हैं।

वैदिक साहित्य में आये अनेक प्रसंग भी कामायनी में यथा क्रम वर्णित है। उदाहरण के लिए उषा को प्रातः काल की देवी माना गया है और इसके विषय में वर्णन है कि वह उषा देवी वेगवान अश्व जुते रथ पर आसीन होकर द्रुतिगति से आती हैं। इनकी गति इतनी अधिक है की ऐसा प्रतीत होता है मानो उनका रथ बाण की गति से चल रहा हो। कामायनी के उषा सर्ग में इससे संबंधित बहुत सुंदर वर्णन है प्रसाद लिखते हैं–

"उषा सुनहरे तीर बरसती जय लक्ष्मी सी उदित हुई।
उधर पराजित कालरात्रि भी जल में अंतर्निहित हुई।"3

उल्लेखनीय है यहां तीर बरसाते की जगह जयशंकर प्रसाद ने तीर बरसती शब्द का सायास प्रयोग किया है। कामायनी के अनेक व्याख्याकार यहां तक कि रामधारी सिंह 'दिनकर' जैसे कवियों ने भी इसे छंद की रक्षा के लिए प्रसाद द्वारा जानबूझकर की गई व्याकरणिक त्रुटि माना है।

कामायनी में एक ओर अपनी परंपरा से प्रेम है तो दूसरी ओर समकालीन घटनाओं ,स्थितियों व विचारों से जुड़ाव भी। श्री जयशंकर प्रसाद ने एक तरफ यदि अतीत का गौरव गान किया है तो दूसरी ओर उसकी शल्यक्रिया भी की है। जयशंकर प्रसाद कहीं भी अतीत की खामियों को ढकने का काम नहीं करते बल्कि उन्हें उजागर करने में ही अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का उपयोग करते हैं। डॉक्टर प्रभाकर श्रोत्रिय के अनुसार–" प्रसाद के इतिहास का वर्तमान से संबंध मित्रवत है जो सराहना के साथ आलोचना भी करता है। इतिहास के प्रति प्रसाद का रुख अन्वेषण और आलोचनापरक है। उन्होंने वर्तमान को केवल उपदेश और प्रेरणा देने के लिए अतीत के किसी भाग को नहीं चुना, बल्कि आत्म समीक्षण के लिए, सामान समस्याओं और प्रश्नों के बारे में उससे विमर्श करने के लिए चुना।"4

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

डॉ रमेश चंद्र शाह ने भी लिखा है–" अतीत की खुदाई उन्होंने गौरव गान की आकांक्षा से नहीं की है बल्कि एक आधुनिक पुरातत्व वेत्ता की दृष्टि से उन्मथित होकर की है।"5

आमुख से भी स्पष्ट है कि जयशंकर प्रसाद मनु के प्राचीन मिथक को ग्रहण करते हुए भी उसका वर्तमान रुचि से सामंजस्य स्थापित करते हैं। श्री जयशंकर प्रसाद के अतीत और वर्तमान, पूर्व एवं पश्चिम के समीक्षा एवं विश्लेषण का उद्देश्य वर्तमान को सुंदर व सम्पूर्ण मानवता के लिए कल्याणकारी बनाना था। वरिष्ठ समीक्षक डॉ सत्यप्रकाश मिश्र ने कामायनी के संदर्भ में कहा है–"कामायनी में एक प्रकार की लोक कल्याणकारी दृष्टि सर्वोदयी निष्कर्ष के रूप में न केवल व्याप्त है बल्कि उसका परिणाम भी लगभग सर्वोदय जैसा ही है।"6

कामायनी में सर्व मंगल, सर्वहित एवं सर्व कल्याण की भावना, प्राणी मात्र की समता एवं भ्रातृत्व भाव आद्योपांत विद्यमान है। जैसे श्रद्धा का मनु को औरों को हँसते देखकर सुख पाने का संदेश हो या यह संवेदना पूर्ण कथन–

" यह जो प्राणी बचे हुए हैं इस अचला धरती के
इन सब के अधिकार नहीं क्या वह सब ही हैं फीके।"7

कामायनी में सर्वत्र गांधी की अहिंसा ,सत्याग्रह व सर्वोदय की विचारधारा विद्यमान है। कामायनी में श्रद्धा मनु को सबके सुख में ही स्वयं का सुख देखने का परामर्श देती है। कामायनी का यह सर्व मंगलवाद मानववाद की भी अगली कड़ी नजर आता है क्योंकि यहां चिंता केवल मनुष्य की नहीं अपितु प्राणी मात्र की है। वस्तुतः कामायनी जिस समय लिखी जा रही थी वह समय स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा गांधी के अभ्युदय एवं गांधीवादी आंदोलनों की चरमावस्था का था। कामायनी में स्थान स्थान पर अहिंसा, प्राणी मात्र के प्रति समता, आत्मोत्सर्ग यहां तक कि गांधी का चरखा और तकली भी उपस्थित हैं। एक प्रसंग में मनु शिकार के लिए चले जाते हैं और उसी समय श्रद्धा तकली चलाते हुए सुंदर गीत गाती है। यह साम्राज्यवादी शक्तियों की बर्बरता के विरुद्ध गांधी का अहिंसक प्रत्युत्तर ही तो है।

नवजागरण की चेतना की अभिव्यक्ति का एक प्रमुख स्वर स्त्री पुरुष की समता एवं स्त्री स्वाभिमान की चिंता रहा है। श्री जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में स्त्री अस्मिता के प्रश्न को प्रमुखता से उठाया है। कामायनी के इड़ा सर्ग में काम मनु को सतर्क करते हुए कहता है–

" तुम भूल गए पुरुषत्व मोह में कुछ सत्ता है नारी की
समरसता ही संबंध बनी अधिकार और अधिकारी की" ।8

कामायनी में स्त्री जीवन में उत्साह, उमंग और ऊर्जा के स्रोत के रूप में उपस्थित है। उदाहरण के लिए श्रद्धा मनु के जीवन में पतझड़ में बसंत के दूत के रूप में उपस्थित हुई है। कामायनीकार ने श्रद्धा के केवल शारीरिक सौंदर्य का वर्णन नहीं किया है, आंतरिक सौंदर्य का वर्णन किया है और श्रद्धा की सुंदर देहयष्टि को उसके सुंदर मन की प्रतिकृति बताया है। इसी प्रकार स्त्री सौंदर्य की परंपरागत नख शिख वर्णन परंपरा को तोड़ते इड़ा का वर्णन उसके सिर से प्रारंभ करते हैं। यहां इड़ा बुद्धि के प्रतीक चरित्र के रूप में उपस्थित है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

जयशंकर प्रसाद कामायनी में न केवल तदयुगीन चेतना की ही अभिव्यक्ति करते हैं बल्कि आने वाले युग के नवीन संकटों के प्रति हमें आगाह भी करते हैं। नवीन लोकतांत्रिक व्यवस्था के जिस स्वप्न को लेकर स्वतंत्रता आंदोलन लड़ा जा रहा तथा प्रसाद के अपने समय में जिसकी मात्र पदचाप सुनाई दी थी, युगद्रष्टा साहित्यकार उस नवीन व्यवस्था के भी संकट और चुनौतियों से हमारा आमना सामना करवाने की कोशिश करता है। इड़ा सर्ग में भावी लोकतंत्र के समक्ष उपस्थित खतरों से आगाह करते हुए वह कहते हैं–

" यह अभिनव मानव प्रजा श्रृष्टि
द्वयता में लगी निरंतर ही वर्णों की करती रहे वृष्टि
अनजान समस्याएं गढ़ती रचती अपनी ही विनष्टि।
कोलाहल कलह अनंत चले एकता नष्ट हो बढ़े भेद
अभिलषित वस्तु तो दूर रहे हां मिले अनिच्छित दुःखद खेद।"9

इड़ा सर्ग में ही कामायनीकार ने भविष्य में मानवता के समक्ष मुंह बाए खड़ी अति यांत्रिकता, अति भौतिकता और अति बौद्धिकता की समस्याओं से भी परिचय करवाया है। रहस्य सर्ग में श्री जयशंकर प्रसाद ने नवीन पूंजीवादी व्यवस्था को ही कर्म के रूप में दिखाकर इसकी अंतिम परिणति स्वार्थवाद और महत्वाकांक्षा की अंधी दौड़ माना है। वे लिखते हैं–

" श्रममय कोलाहल पीड़ामय
विकास प्रवर्तन महा यंत्र का
क्षण भर भी विश्राम नहीं है
प्राण दास है क्रिया तंत्र का।"10

उल्लेखनीय है कि यहां कामायनीकार ने आधुनिक युग के जिन खतरों से सावधान किया है, प्रसाद के अपने युग में उनका अप्रत्यक्ष आभास तक नहीं हो रहा था। स्पष्ट है श्री जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में अतीत और वर्तमान के साथ उस भविष्य जीवन की भी समीक्षा की है जो अभी आना शेष था तथा जिसके आगे अभी राह दिखाई नहीं देती थी। परंतु काल की सीमा से परे देखना यही तो किसी कालजयी रचना की सबसे बड़ी विशेषता और युगद्रष्टा साहित्यकार की साहित्य साधना से अर्जित सामर्थ्य होती है।

इतिहास की पृष्ठभूमि पर आधारित होकर भी कामायनी वैदिक आख्यान मात्र नहीं है, वरन रूपक के माध्यम से इसमें श्री जयशंकर प्रसाद ने आधुनिक मानव के मनोविज्ञान को भी उद्घाटित किया है। साथ ही कामयनी अपने युग के श्रेष्ठ विचारों को भी अभिव्यक्त करती है जैसे मानववाद,गांधीवाद इत्यादि। इसके साथ ही कामायनीकार ने भविष्य जीवन की अनेक चुनौतियों को भी प्रस्तुत किया है ।इसी कारण हम कामायनी को कालजयी कृति कहते हैं।

कामायनी में जयशंकर प्रसाद वर्तमान और भविष्य की समस्याओं का उद्घाटन मात्र करके नहीं रह जाते अपितु वह उसके संभावित समाधान पर भी बात करते हैं। प्रसाद सभी दुख और क्लेश के मूल कारण पर विचार करते हुए कहते हैं 'विषमता की पीड़ा से व्यस्त स्पंदित हो रहा विश्व महान।'

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

अर्थात मनुष्य की क्लेशमयी अवस्था का कारण समाज में व्याप्त आंतरिक व वाह्य वैषम्य है। इस विषमता को तमाम विचारकों ने पहचाना जिसमें कार्ल मार्क्स का नाम प्रमुखता से लिया जाता है किंतु मार्क्स ने जो समाधान प्रस्तुत किया वह अधूरा था क्योंकि उससे वाह्य विषमता तो दूर हो सकती थी किंतु आंतरिक विषमता का क्या। और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि मार्क्स द्वारा दिया गया भौतिकवादी समाधान वर्तमान समय में स्वयं में ही एक समस्या बन गया है। गांधी की तरह जयशंकर प्रसाद ने भी शायद साम्यवादी समता की अवधारणा की अपूर्णता को पहचान लिया था। इसलिए प्रसाद ने समरसता को विषमता के उन्मूलन एवं आनंद प्राप्ति के मार्ग के रूप में स्वीकार किया। कामायनी की समापक पंक्तियां हैं–

समरस थे जड़ व चेतन सुंदर साकार बना था
चेतनता एक विलसती आनंद अखंड घना था।

संदर्भ सूची–

1– प्रसाद जयशंकर; कामायनी– लोक भारती प्रकाशन (2017)पृष्ठ आमुख 5 व 8।
2–ऋग्वेद(10–151–4)
3–प्रसाद जयशंकर, कामायनी– लोक भारती प्रकाशन(2017) पृष्ठ –7।
4– तिवारी विश्वनाथ प्रसाद, जयशंकर प्रसाद– अभिव्यक्ति प्रकाशन प्रयागराज (1999) पृष्ठ संख्या– 21
5– शाह रमेशचंद्र,जयशंकर प्रसाद– साहित्य अकादमी दिल्ली (2012) पृष्ठ संख्या– 71
6–तिवारी विश्वनाथ प्रसाद, जयशंकर प्रसाद– अभिव्यक्ति प्रकाशन प्रयागराज (1999) पृष्ठ संख्या–143।
7–प्रसाद जयशंकर, कामायनी– लोक भारती प्रकाशन(2017) पृष्ठ –41।
8–प्रसाद जयशंकर, कामायनी– लोक भारती प्रकाशन(2017) पृष्ठ –53।
9–प्रसाद जयशंकर, कामायनी– लोक भारती प्रकाशन(2017) पृष्ठ –54।
10–प्रसाद जयशंकर, कामायनी– लोक भारती प्रकाशन(2017) पृष्ठ –105।